नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

खाड़ी युद्ध; लघु और सूक्ष्म उद्योग को बचाना जरूरी

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और ईरान से जुड़े युद्ध जैसे हालातों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक बार फिर अस्थिरता के मुहाने पर ला खड़ा किया है. इसका सीधा असर भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ना स्वाभाविक है. विशेष रूप से देश के लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्योग (एमएसएमई) इस संकट की सबसे कमजोर कड़ी बनकर उभर रहे हैं. ऐसे समय में इन उद्योगों को सहारा देना केवल आर्थिक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिरता की भी अनिवार्यता है.

ऊर्जा और खाद्य संकट की आशंका ने उत्पादन लागत को तेजी से बढ़ा दिया है. भारत की आयातित महंगाई पांच प्रतिशत के पार पहुंच चुकी है, जो इस बात का संकेत है कि आने वाले समय में लागत आधारित दबाव और गहराएगा. मार्च में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा 12.7 अरब डॉलर की निकासी यह दर्शाती है कि वैश्विक निवेशकों का भरोसा भी डगमगा रहा है. ऐसे में सबसे पहले झटका उन्हीं एमएसएमई को लगता है, जिनकी वित्तीय स्थिति पहले से ही सीमित संसाधनों पर टिकी होती है.

सरकार द्वारा इस स्थिति को संभालने के प्रयास सराहनीय हैं. औद्योगिक संगठनों और छोटे उद्यमियों से लगातार संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं का आकलन किया जा रहा है. निर्यात लागत कम करने के लिए 500 करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा और पेट्रोल-डीजल पर कर में कटौती जैसे कदम राहत देने वाले हैं. लेकिन वर्तमान परिस्थितियां यह संकेत देती हैं कि यह प्रयास पर्याप्त नहीं होंगे, बल्कि इन्हें और व्यापक तथा लक्षित बनाने की आवश्यकता है.

कोरोना काल के दौरान लागू की गई इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी स्कीम ने एमएसएमई क्षेत्र को बड़ी राहत दी थी. आज एक बार फिर वैसी ही पहल की जरूरत महसूस हो रही है. सरकार को चाहिए कि वह प्रभावित क्षेत्रों की पहचान कर उन्हें आसान शर्तों पर ऋण, पुनर्भुगतान में छूट और कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराए. इसके साथ ही डॉलर के मुकाबले रुपये की स्थिरता बनाए रखने और व्यापार लागत कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएं.

युद्ध के कारण पेट्रोकेमिकल्स पर निर्भर उद्योग—जैसे प्लास्टिक, केमिकल्स, टेक्सटाइल और सेरेमिक—पहले ही प्रभावित हो चुके हैं. गैस की कमी और कच्चे माल की महंगाई ने कई छोटे उद्योगों को बंद होने की कगार पर पहुंचा दिया है. इसका सबसे गंभीर प्रभाव श्रमिकों पर पड़ रहा है, जिनका पलायन शुरू हो चुका है. यदि यह प्रवृत्ति बढ़ती है, तो न केवल औद्योगिक उत्पादन प्रभावित होगा, बल्कि सामाजिक-आर्थिक असंतुलन भी गहराएगा.

यह समझना होगा कि एमएसएमई केवल आर्थिक इकाइयां नहीं हैं, बल्कि वे करोड़ों लोगों की आजीविका का आधार हैं. एक बार उत्पादन ठप होने पर उसे फिर से पटरी पर लाने में महीनों लग जाते हैं. इसलिए समय रहते हस्तक्षेप करना बेहद जरूरी है. सरकार को वित्तीय सहायता के साथ-साथ वैकल्पिक उद्योगों—विशेषकर पेट्रोकेमिकल्स के विकल्पों,को भी प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसे वैश्विक संकटों का असर कम किया जा सके.

वर्तमान चुनौती अस्थायी जरूर है, लेकिन इसके प्रभाव दीर्घकालिक हो सकते हैं. इसलिए यह समय त्वरित, निर्णायक और दूरदर्शी नीति हस्तक्षेप का है. यदि देश के लघु और सूक्ष्म उद्योगों को इस संकट से सुरक्षित निकाल लिया गया, तो न केवल अर्थव्यवस्था को स्थिरता मिलेगी, बल्कि भारत की विकास यात्रा भी अविराम बनी रहेगी.

मालवा- निमाड़ की डायरी

साथियों के गैर रणनीतिक बयान, जीतू पटवारी चिंतित

संजय व्यास

लोकसभा चुनाव 2024 में 0-29 से हार के बाद हुई कांग्रेस की किरकिरी से नाराज राहुल गांधी का गुस्सा प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी पर फूटा था. इसके उपरांत राहुल गांधी के मद्दू में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान पटवारी ने इसके लिए माफी मांगने के साथ कांग्रेस को प्रदेश में मजबूत करने का वचन दिया था. अब कुछ माह में होने वाले राज्य सभा चुनाव पटवारी की परीक्षा की घड़ी होंगे. आगामी जून तक रिक्त हो रही 3 सीटों के लिए चुनाव होंगे. विधायकों के समीकरण के

हिसाब से कांग्रेस को एक सीट मिलना है. उसके लिए भी जीतू पटवारी के समक्ष चुनौतियां खड़ी हैं. उन्हें मनोबल बढ़ाने वाले साथियों की आवश्यकता है, परंतु हाल के कुछ बयानों के कारण उन्हें विकट स्थिति का सामना करना पड़ रहा है. विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और प्रदेश कांग्रेस महासचिव राकेश सिंह यादव के सार्वजनिक रूप से दिए बयान कि राज्य सभा चुनाव में पार्टी के कुछ विधायकों के क्रास वोटिंग की आशंका है, इसने कांग्रेस का ही मनोबल तोडऩे का काम किया है. ऐसी बातें गोपनीयता के साथ पार्टी नेतृत्व को बताई जाती हैं, ताकि कमजोर कड़ी को रणनीतिक रूप से थाम ले. मगर ऐसा न होना किसी भी राजनेता की अपरिपक्वता की निशानी है. सिंघार और राकेश सिंह को इस तरह की कोई भी पार्टी की कमजोरी को रणनीतिक तौर पर वरिष्ठों से सुधरवाने की दिशा में कदम बढ़ाना था, लेकिन उन्होंने खुलेआम इस कमजोरी को विपक्षी पार्टी के सामने ला दिया, जिसका वह फायदा उठा सकती है. फिलहाल इस स्थिति ने चुनाव जीतने की तैयारी में लगे जीतू पटवारी को चिंता में डाल दिया है. वैसे ही 65 विधायकों की पार्टी में न्यायालयीन आदेश से एक विधायक का वोटिंग अधिकार अटक गया, वहीं एक की सजा होने से विधायकी समाप्त हो गई और कुछ डांवाडोल हैं.

खंडवा ब्लॉक के 'हाथ' में 'भगवा' कमान

खंडवा जिला कांग्रेस संगठन में हाल ही में हुई नियुक्तियों से कार्यकर्ताओं में आक्रोश व्याप्त है. संगठन विस्तार के नाम पर जारी की गई लिस्ट में रणनीतिक चूकें सामने आई हैं, जिनसे पार्टी की साख दांव पर लग गई है. कार्यकर्ताओं का आरोप है कि पद बांटने में निष्ठा से ज्यादा 'नजदीकियों' और 'बाहरी' रसूख का ध्यान रखा गया है. आलम यह है कि कांग्रेस की इस नई फौज में भाजपा समर्थकों तक को जगह मिल गई है, जिससे समर्पित कार्यकर्ता बिफर गए हैं. भाजपा समर्थक की नियुक्ति का मामला ब्लाक से जुड़ा है. आरोप है कि जिस व्यक्ति को संगठन की मजबूती के लिए ब्लॉक अध्यक्ष की कमान सौंपी गई है, वह खुलेआम भाजपा की विचारधारा और उनके कार्यक्रमों का समर्थन करता रहा है. निष्ठावान कांग्रेसियों का सवाल है कि क्या पार्टी के पास अब समर्पित कार्यकर्ताओं का अकाल पड़ गया है जो 'भगवा' रंग में रंगे चेहरों को 'हाथ' का साथ दिया जा रहा है?

कलेक्टर ने विधायक को क्यों इंतजार करवाया?

रतलाम कलेक्ट्रेट में विगत चार माह से धरना, प्रदर्शन, नारेबाजी, एकत्रीकरण पर प्रतिबंध लगा हुआ है. इसके बाद भी आलोट के भाजपा विधायक व पूर्व सांसद चिंतामणि मालवीय उज्जैन से जावरा तक बन रहे ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस-वे के मुआवजे के संबंध में किसानों की समस्या को लेकर ग्रामीणों के साथ कलेक्ट्रेट पहुंच गए. प्रतिबंधित क्षेत्र में बगैर कोई सूचना, अनुमति के उनके लवाजमे के साथ आने पर कलेक्टर मिशा सिंह उखड़ गईं. विधायक के बोर्ड छोड़कर बाहर आने के बुलावे को उन्होंने नजर अंदाज कर दिया. काफी इंतजार के बाद आखिर विधायक मालवीय ने ग्रामीणों को लेकर वहीं सीढ़ियों पर धरना दे दिया. इस हालात में आधे घंटे उपरांत कलेक्टर बाहर आईं और विधायक की बात सुनीं. किसानों ने अपनी पीड़ा बताते हुए कहा कि अधिग्रहित जमीन का उन्हें प्रस्तावित ढाई लाख रुपए प्रति बीघा मुआवजा दिया जा रहा है, जो वर्तमान बाजार दर की तुलना में बहुत कम है. किसानों ने मांग की कि जमीन का उचित मूल्य बाजार भाव के अनुसार तय किया जाए. इस पर कलेक्टर के मुआवजे की पुनर्समीक्षा करवाने के आश्वासन पर वे लौट गए, उधर इंतजार करवाने की बात पर प्रशासन की ओर से सफाई दी गई कि उन्हें कलेक्टर कक्ष में चर्चा के लिए बुलाया गया, लेकिन विधायक ने ही यह कहते हुए मना कर दिया कि मामला जनता से जुड़ा है, इसलिए बातचीत भी खुले में और सभी के सामने ही होनी चाहिए.

हर बच्चे के लिए सीखने का नया स्वरूप

धर्मेंद्र प्रधान

> एक साझा राष्ट्रीय प्रतिबद्धता- शिक्षा एक साझा जिम्मेदारी है.यह सरकारों, स्कूलों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदायों की जिम्मेदारी है.हर हितधारक की इसमें भूमिका है. हर बच्चे को सीखने की यात्रा में देखा, सुना और मार्गदर्शन किया जाना चाहिए.हमारी शिक्षा प्रणाली की सच्ची पहचान कुछ चुनिंदा उच्च उपलब्धि हासिल करने वालों से नहीं, बल्कि इस बात से होती है कि पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना हर बच्चा आत्मविश्वास और आनंद के साथ सीखता है या नहीं.आइए, समावेशी, नवोन्मेषी और भविष्य के लिए तैयार शिक्षा प्रणाली के निर्माण के प्रति अपनी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को दोहराएं.साथ मिलकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हर कक्षा सपनों को साकार करने का स्थान बने और आने वाले कल के नेताओं का निर्माण हो.2047 तक विकसित भारत के अग्रदूत आज हमारी कक्षाओं में मौजूद हैं.आइए, उन्हें उड़ान भरने के लिए सुनहरे पंख दें.

हर साल, जब स्कूलों के द्वार नए शैक्षणिक सत्र के लिए खुलते हैं, तो भारत सामूहिक संकल्प के सबसे गहन उदाहरणों में से एक का साक्षी बनता है. पहाड़ों और तटों से लेकर शहरों और दूरदराज के गांवों तक, लाखों बच्चे कभी-कभी अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों के बावजूद, नए जोश, नई आकांक्षाओं और अपार संभावनाओं के साथ अपनी कक्षाओं में कदम रखते हैं.यह एक शांत लेकिन शक्तिशाली राष्ट्रीय क्षण है. इस वर्ष भी लगभग दो करोड़ बच्चों ने पहली कक्षा में प्रवेश लिया है, जो आशा और एक साझा राष्ट्रीय जिम्मेदारी दोनों को समेटे हुए है.।

भारत का स्कूली ढांचा बेहद विशाल है.इसमें 14.7 लाख से अधिक स्कूल, लगभग 25 करोड़ नामांकित छात्र और एक करोड़ से ज्यादा शिक्षक शामिल हैं.ये संख्याएं केवल प्रशासनिक स्तर को मापने का जरिया भर नहीं हैं, बल्कि ये शिक्षा के माध्यम से हमारे देश के भविष्य को गढ़ने की एक मजबूत प्रतिबद्धता की घोषणा करती हैं.राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने रटने की आदत से आगे बढ़कर जिज्ञासा, समझ और समग्र विकास (होलिस्टिक डेवलपमेंट) को सीखने के केंद्र में रखा है.हर नया शैक्षणिक सत्र उस सपने को साकार करने की दिशा में एक सार्थक कदम है.बालवाटिका लागू होने से अब छोटे बच्चों की शुरुआती पढ़ाई स्कूल व्यवस्था का हिस्सा बन गई है.इससे बच्चे पहली कक्षा में बेहतर तैयारी और मजबूत बुनियादी कौशल के साथ प्रवेश करते हैं.बच्चे का स्कूल में दाखिला उसके जीवनभर के सीखने और समाज से जुड़ने की शुरुआत होता है.इसलिए जरूरी है कि यह सफर खुशी, अच्छे माहौल और अपनापन महसूस कराने वाला हो.सीखने का सफर- पहले कदम से आत्मविश्वास तक- स्कूल का पहला दिन खास होता है.इसमें थोड़ी झिझक होती है, तो नए शुरुआत की खुशी भी होती है.छोटे-छोटे बच्चे अपने बड़े-बड़े भाव लेकर स्कूल आते हैं और उनकी जिज्ञासु आंखें एक नई दुनिया देखती हैं.जब बच्चे खुद को सुरक्षित और महत्वपूर्ण महसूस करते हैं, तो वे खुलने लगते हैं.वे ज्यादा भाग लेते हैं, सवाल पूछते हैं और उनकी जिज्ञासा बढ़ती है.धीरे-धीरे उनका आत्मविश्वास भी मजबूत होता जाता है. शुरुआती साल खेल, खोज और नई चीज़ें सीखने पर आधारित होने चाहिए, यही जीवनभर की सीखने की यात्रा की शुरुआत है.अच्छे रिश्ते बहुत मायने रखते हैं.एक समझदार और देखभाल करने वाला शिक्षक बच्चे की जिंदगी बदल सकता है.सहयोगी कक्षा माहौल बच्चे की चुप्पी को भागीदारी में और भागीदारी को आत्मविश्वास में बदल सकता है.जब बच्चा खुद को सच में समझा और सुना हुआ महसूस करता है, तो उसकी जिज्ञासा हिम्मत में बदल जाती है.और जब उसे अपनापन महसूस होता है, तो वह अपनी आवाज़ पहचानने लगता है. इन प्रारंभिक वर्षों के केंद्र में बुनियादी साक्षरता और अंकगणित के प्रति एक मजबूत राष्ट्रीय प्रतिबद्धता निहित है.निपुण भारत मिशन के माध्यम से, भारत ने एक स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किया है-कक्षा 2 के अंत तक प्रत्येक बच्चा समझ के साथ पढ़ सके और बुनियादी अंकगणित कर सके.ध्यान उत्तरों को रटने से हटकर अवधारणाओं को समझने पर केंद्रित है.कक्षाओं को बच्चों को केवल उत्तर दोहराने के बजाय प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना चाहिए.यह दृष्टिकोण अकादमिक शिक्षा से परे है.कला, खेल और मूल्य सीखने की प्रक्रिया के अनिवार्य अंग हैं. शिक्षा को संपूर्ण बच्चे का निर्माण करना चाहिए- न केवल मन का, बल्कि शरीर और हृदय का भी.शारीरिक गतिविधि और पोषण दैनिक स्कूली जीवन का अभिन्न अंग हैं.एक स्वस्थ बच्चा बेहतर सीखता है, अधिक भाग लेता है और आत्म-सम्मान की स्वस्थ भावना के साथ विकसित होता है.

उभरती चुनौतियों का सामना- वैश्विक स्तर पर, बच्चों की जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव आया है.खान-पान की आदतों में बदलाव और शारीरिक गतिविधि में कमी कई देशों के लिए चिंता का विषय बन गई है.भारत इस चुनौती का सक्रिय रूप से सामना कर रहा है.अनिवार्य शारीरिक शिक्षा, स्कूलों में मोटापे से निपटने के लिए ऑयल बोर्ड और शुगर बोर्ड जैसे उपाय और पोषण गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने वाली मजबूत पीएम-पोषण योजना स्कूलों को स्वास्थ्य और सक्रिय जीवनशैली की ओर उन्मुख कर रही है.इन प्रयासों का उद्देश्य एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करना है जो स्वास्थ्य को समग्र विकास का केंद्र मानती हो.

(लेखक केंद्रीय शिक्षा मंत्री हैं)

5 दशक बाद फिर चंद्र अभियान प्रारंभ

अमेरिका ने 54 वर्ष बाद अपने चंद्र अभियान का दूसरा अध्याय शुरू करते हुए केनेडी स्पेस सेंटर से एसएलएस शक्तिशाली रॉकेट की मदद से अपने 4 एस्ट्रोनॉट को चंद्रमा की कक्षा की परिक्रमा करने भेजा है. इस अभियान को ग्रीक देवता आर्टेमिस का नाम दिया गया है. पहले चरण में आर्टेमिस 1 मानव रहित यान 2022 में चंद्रमा की कक्षा में भेजा गया था. आर्टेमिस 2 मुहिम के लिए फरवरी में किए गए परीक्षण में रॉकेट के ऊपरी हिस्से में हीलियम लीक होने का पता चला तो उसको सुधारा गया. इसके बाद अब आर्टेमिस को सफलतापूर्वक भेजा गया है जिसमें 4 अंतरिक्ष यात्री रीड वाइजमैन, विक्टर ग्लोवर, क्रिस्टीना कोच तथा कनाडा के जेरेमी हैन्सन का समावेश है. यह अंतरिक्ष यान पृथ्वी से 4 लाख किलोमीटर से भी अधिक दूरी पर जाकर चंद्रमा की सतह से 6,400 से 9,400 किलोमीटर अंतर रखकर

उसकी कक्षा की परिक्रमा करेगा. वहां यह अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा का वह हिस्सा देखेंगे जो पृथ्वी से दिखाई नहीं देता. इनकी 11 अप्रैल को पृथ्वी वापसी होगी. अंतरिक्ष यानी रीड वाइजमैन ने कहा कि इस अंतरिक्ष यान से चंद्रमा की ओर जाने वाली आगामी मुहिम के लिए सटीक आकलन होगा व आवश्यक जानकारी मिलेगी. इसके बाद 2028 में चंद्रमा के धरातल पर इंसान को उतारा जाएगा. नासा की यह 10 दिवसीय मुहिम विशेष महत्व रखती है. यहां उल्लेखनीय है कि 1969 में अमेरिका के अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग ने चंद्रमा पर पहला कदम रखा था. उनके सहयात्री माइकल कॉलिन्स व एडविन एल्ड्रन थे. इसके बाद 1968 से 1972 तक अमेरिका ने अपोलो अभियान के तहत अपने अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर उतारा था.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

हिंदी विरोध की घातक राजनीति पर कब आएगी नेताओं को सन्मति

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री व डीएमके प्रमुख एम. के. स्टालिन फिर हिंदी विरोध पर उतर आए हैं. उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार नई शिक्षा नीति के तहत सीबीएसई स्कूलों में हिंदी लाद रही है. त्रिभाषा फार्मूले से गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी अनिवार्य कर दी जाएगी. 2026-27 के शिक्षा सत्र में छठी कक्षा से हिंदी पढ़ाए जाने का उन्होंने तीव्र विरोध किया है.'

हमने कहा, 'राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क, संवाद, रोजगार, व्यापार व नौकरियों के लिए हिंदी सीखनी ही चाहिए. त्रिभाषा फॉर्मूला इसके लिए अवसर प्रदान कर रहा है. बच्चों में ग्रहण शक्ति अच्छी होती है. वह जल्दी ही हिंदी सीख लेंगे. उन्हें अपनी मातृभाषा तमिल और अंग्रेजी के साथ हिंदी भी आ जाएगी. व्यक्ति का बहुभाषी होना बहुत अच्छी बात है. यदि आप यूरोप घूमने जाएं तो वहां अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच और जर्मन जानना भी बहुत उपयोगी होता है. हिंदी कठिन नहीं है. दक्षिण भारत के आईएएस और हिंदी पोस्टिंग हो, वहां की भाषा अच्छी तरह बोलना सीख लेते हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आप राजनीति में घुसे भाषावाद को समझिए. मनसे नेता राज ठाकरे भी तो हिंदी विरोधी हैं. परप्रांतीयों की पिटाई से उन्होंने अपनी राजनीति चमकाई थी. महाराष्ट्र में भी परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक ने आरटीओ को निर्देश दिया है कि जिन ऑटोरिक्शा चालकों को मराठी बोलना नहीं आता, उनके परमिट छीन लिए जाएं. महाराष्ट्र में ऑटो चलाना है तो यात्रियों से मराठी में बात करनी होगी. यह क्षेत्रीय अस्मिता का सवाल है.'

हमने कहा, 'हिंदी भारतमाता के माथे की बिंदी है. इसे प्रेम से अपनाना सभी का कर्तव्य है. हमारी सेना के हर जवान को हिंदी आती है. वैजयंतीमाला, हेमा मालिनी, श्रीदेवी, रेखा तमिलनाडु की थीं लेकिन यह सभी हिंदी फिल्मों की लोकप्रिय हीरोइनें बनीं. यहां तक कि जयललिता ने भी धर्मेंद्र के साथ फिल्म 'इज्जत' में काम किया था. बाद में वह तमिलनाडु की मुख्यमंत्री बनीं. यदि लोग सिर्फ अपने राज्य की भाषा जानने तक सीमित रहेंगे तो कुएं के मेंढक या कूपमंडूक बनकर रह जाएंगे. हिंदी विरोध की राजनीति राष्ट्र के लिए नुकसानदेह है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12221 - डॉ. सागर खादीवाला

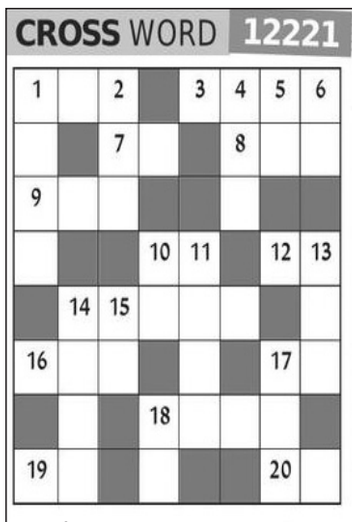

देह के साथ जल मरने वाली स्त्री

ऊपर से नीचे

1. खाकर तृप्त होना, किसी का माल पचा जाना 2. अति कष्ट, पीड़ा (सं.) 4. रात, निशा 5. देने वाला, दान देने वाला 6. माता का पिता, अनेक प्रकार के 10. श्रृगाली, गीदड़ी, घोड़ी (सं.) 11. पवनपुत्र 13. दृष्टि (उर्दू) 14. वन की अधिष्ठात्री देवी 15. नाड़ी 17. लोहे को सोना बनाने वाला एक कल्पित पत्थर 18. सर्दी, शीतकाल

बाएं से दाएं

1. बांस की फट्टियों का बना एक पात्र, टोकरी 3. वह थैला या बोरा जिसमें माल रखा जाता है 7. दलील, हेतुपूर्ण युक्ति 8. बताना, आगाह करना 9. आयोजन करना, मेहंदी लगाना 10. प्रशंसा या आश्चर्यसूचक शब्द 12. मछली, एक राशि 14. बिना पूंछ का बड़ा बंदर जो मनुष्य के आकार का होता है 16. मन, हृदय, रामचरित मानस 17. अंत, सिरा, सामने वाला दूसरा तट 18. प्राणी, पशु 19. भविष्य में होने वाला, होनी 20. पति की मृत

Solution 12220

उ	दा	रा	श	य		आ	ज्ञा
जा		व	र				ने
स	गु	ण		ब		अ	श्व
ना	ल			या	या	व	र
	द	र	द	र		धा	
प्र	स्ता	व	ना		मु	र	ली
ल			द		कु	णा	ल
य	ज	मा	न		ट		ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा होगी. पद एवं स्थान परिवर्तन के योग है. शारीरिक कष्ट का सामना करना पडेगा. भौतिक सुख प्राप्त होगा. उत्तरदायित्वों को सम्हालने की आवश्यकता है. वर्ष के मध्य में व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. यात्रा से कष्ट होगा. वर्ष के अन्त में विवाद एवं मतभेद हो सकते है. आय में सुधार होगा. भाईयों का सहयोग रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को रचनात्मक प्रयास सार्थक होंगे. भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है. दाम्पत्य जीवन में कलह की स्थिति न आने दें. सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यो में वृद्धि होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को दिनचर्या में व्यवधान आयेगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनीतिक गतिविधियों में वृद्धि होगी. पद एवं प्रभाव बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सन्दर, सुशील, चंचल और आकर्षित व्यक्तित्व का होगा, अपने माता पिता का ध्यान रखेगा, स्वास्थ्य से चंचल और उग्र होगा, अपने मनमर्जी का मालिक होगा, व्यवसाय आदि में कार्यो में अच्छी रूचि रहेगी.

मेष- शत्रुओं पर विजय मिलेगी, दूर गये मित्र के संबंध में समाचार प्राप्त होगा जिससे मन प्रसन्न रहेगा. आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा.

वृषभ- प्रतियोगी परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन की संभावना, आरोप प्रत्यारोप से बचें, पारिवारिक चिन्ता रहेगी, मित्र वर्ग आपकी भरपूर मदद करेंगे.

मिथुन- कोई महत्वपूर्ण समस्या दूर होगी, व्यापार लाभदायक रहेगा, खर्च की अधिकता होगी, बुजुर्ग के स्वास्थ्य की चिन्ता हो सकती है.

कर्क- राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, नौकरी में लाभ प्राप्त होगा, अनावश्यक विवाद को टालना हितकर रहेगा, साहस संयम से काम करें.

सिंह- लाभकारी प्रस्ताव मिलेंगे, कोई आपसी व्यक्ति आपको भ्रमित कर सकता है, इसलिए बहकावे में न आएं.परिवर्तन के योग हैं, सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी.

कन्या- अनावश्यक कार्यो में समय नष्ट होगा, किन्तु आपकी सूझबझ और सतर्कता से काम सम्हल जायेगा, कोई रूका कार्य बनेगा, शुभ सूचना मिलेगी.

तुला- सकारात्मक सोच से मामले सुलझेंगे, किसी मांगलिक कार्य में आपकी उपस्थिति सुखद रहेगी, कोर्ट कचहरी के कार्यो में सफलता मिलेगी.

वृश्चिक- कामकाज पूरा होगा, कोर्ट कचहरी आदि के कार्यो में संलग्नता रहेगी, व्यवसाय व खरीदी के कार्यो में सतर्कता बांछनीय, सम्मान मिलेगा.

धनु- कुटुम्बियों से सुख एवं सहयोग मिलेगा, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी, शुभ संदेश प्राप्त होने का योग .

मकर- नये वाहन का सुख मिलेगा, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, उत्साह बढ़ेगा, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.लेनदेन में लापरवाही न करें.

कुम्भ- लेखनादि कार्यो में सफलता मिलेगी, मन में उत्साह बना रहेगा, वाद-विवाद से बचें, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, यश मिलेगा.

मीन- नया काम बनेगा, किसी तरह की चोट-मोच आदि से बचें, मांगलिक कार्य की ओर रूझान रहेगी, लेनदेन में लापरवाही से हानि होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

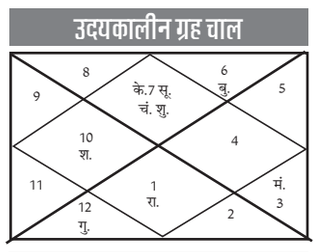

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण पंचमीं भौमवासरे दिन 2/5, ज्येष्ठा नक्षत्रे रात 3/38, व्यतिपात योगे दिन 2/29, तैतिल करणे सू.उ. 5/48, सू.अ. 6/12, चन्द्रचार वृश्चिक रात 3/38 से धनु, शु.रा. 8,10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7 शुभांक- 0,3,7.--

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण पंचमीं को ज्येष्ठा नक्षत्र के से सोना, चांदी, धातु, आदि गेहूँ, जौ, मटर, ज्वार, में मंदी होगी, गुड़, खांड़, शक्कर, अलसी, पारा, हींग, में तेजी होगी. भाग्यांक 1408 है.

SUDOKU 7353

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7352

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1